Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : **www.shisrrj.com**
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 6
OPEN ACCESS
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का उनके विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

[1]श्रीमती रश्मि शर्मा, [2]डॉ. नीरज तिवारी
[1]शोधार्थी, [2]एसोसिएट प्रोफेसर
[1,2]शिक्षा विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छ.ग.)

Article Info

Accepted : 02 Dec 2024

Published : 20 Dec 2024

Publication Issue :

November-December-2024

Volume 7, Issue 6

Page Number : 204-217

सारांश :– उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का उनके विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव को देखने हेतु यह शोध किया गया है। इस शोध से संबंधित उद्देश्य एवं परिकल्पना का निर्माण करने के पश्चात् कुल 800 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श हेतु किया गया। आँकड़ों के संकलन हेतु संस्थागत वातावरण ज्ञात करने हेतु डा. एम.एल.शाह एवं डा. अमिता शाह द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत एकेडमिक क्लाइमेट डेसक्रिप्सन क्वेश्चनरी (ACDQ) संस्थागत वातावरण मापनी एवं मानसिक स्वास्थ्य ज्ञात करने हेतु सुषमा तलेसरा और अख्तर बानो द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य मापनी का प्रयोग कर आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान (M), मानक विचलन (SD), क्रान्तिक अनुपात (CR), सहसम्बन्ध (r) की गणना कर किया गया तथा दण्डआरेख द्वारा प्रदर्शित कर व्याख्या की गयी।

संकेत शब्द :– संस्थागत वातावरण, मानसिक स्वास्थ्य, मध्यमान (M), मानक विचलन (SD), क्रान्तिक अनुपात (CR), सहसम्बन्ध (r)

प्रस्तावना :–

किसी भी विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य पर उसके संस्थागत वातावरण का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। अध्ययन के अनुसार कहा जा सकता है, जिन संस्थाओं में सभी सदस्य प्रेमपूर्वक रहते है, एक–दूसरे का आदर करते है और एक–दूसरे का सहयोग करते है, उन संस्थाओं में मानसिक तनाव कम रहता है और इसका प्रत्यक्ष प्रभाव बच्चो के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है, वे भी तनावमुक्त जीवन व्यतीत करते है। इसके विपरीत जिन संस्थाओं के सदस्यों के बीच प्रेम नहीं होता है, जहाँ

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

सभी एक–दूसरे से ईर्ष्या रखते हो और शान्ति के स्थान पर कलहपूर्ण वातावरण रहता है, उस संस्थाओं के सभी सदस्यों में मानसिक तनाव रहता है और यह भी देखा गया है कि जिन संस्थाओं की आर्थिक स्थिति ठीक नही होती और वे अपने संस्था के बच्चो की आवश्यकताओं की पूर्ति नही कर पाते, उस संस्था के बच्चे मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाते है। शिक्षकों का अपने विद्यार्थियों के साथ प्रेम, सहानुभूति और सहयोगपूर्ण व्यवहार उनके मानसिक स्वास्थ्य के विकास में सहायक होता है, और उपेक्षापूर्ण अथवा कठोर व्यवहार बाधक होता है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि शिक्षकों का बच्चों के प्रति आवश्यकता से अधिक लाड़ अथवा उसके विपरीत आवश्यकता से अधिक उपेक्षापूर्ण व्यवहार भी बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डालते है।

अतः शोधकर्ती को उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का उनके विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन को देखने की आवश्यकता प्रतीत हुई है। प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष से स्पष्ट जानकारी प्राप्त हो सकेगी कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं मानसिक स्वास्थ्य पर उनके संस्थागत वातावरण का क्या प्रभाव पड़ता है? यह जानकारी छात्रों, अभिभावकों, शिक्षाविदों, मनोवैज्ञानिकों तथा समाजशास्त्रियों के लिए लाभप्रद सिद्ध होंगे जिससे सहयोगात्मक, सकारात्मक व स्वस्थ शिक्षण के लिए मार्ग प्रशस्त होगा तथा परिवारों में स्वस्थ वातावरण का विकास किया जा सकेगा।

समस्या का कथन :–

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का उनके विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

प्रकार्यात्मक शब्दों की परिभाषा :–

प्रस्तुत शोध में संबंधित प्रकार्यात्मक शब्दों की परिभाषाएं –

- **उच्चतर माध्यमिक स्तर –** प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा 11 एवं 12 तक का विद्यालय उच्चतर माध्यमिक स्तर का कहा गया है।
- **संस्थागत वातावरण –** किसी विद्यालय के संस्थागत वातावरण से अभिप्राय एक ऐसे वातावरण से होता है, जहाँ शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया स्वतः एवं स्वाभाविक होता है, जहाँ शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में आये अवरोधों को शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों के संयुक्त प्रयास से दूर किया जाता है, जहाँ छात्र सीखने की क्रिया में स्वयं उत्साह से भाग लेता है और अपने व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने का प्रयास करता है संस्थागत वातावरण के अन्तर्गत न केवल भौतिक सामग्री को सम्मिलित किया जाता है। बल्कि इसके अतिरिक्त और भी कई विमाओं को सम्मिलित किया जाता है।

- **मानसिक स्वास्थ्य –** प्रस्तुत शोध अध्ययन में मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ – खुश रहने, यथार्थवादी व सामाजिक रूप से परिपक्व होने, जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने और उनको स्वीकार करने तथा दैनिक जीवन में भावनाओं, इच्छाओं, महात्वाकांक्षाओं और आदर्शो में सन्तुलन रखने की योग्यता है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

इस शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी ने उद्देश्यों का निर्धारण किया जिससे यह शोध कार्य करने में सफलता प्राप्त हो सके यह उद्देश्य इस प्रकार है –

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण व उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना :–

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया हैः–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।
3. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण व उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया जाएगा।

शोध की परिसीमा :–

परिसीमा का तात्पर्य है समस्या के व्यापक रूप को एक सीमा में बांधना है क्योंकि व्यापक क्षेत्र में अध्ययन कठिन एवं अधिक खर्चीला होगा।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने परिसीमा का निर्धारण इस प्रकार किया है :–

(1) प्रस्तुत शोध के लिए रायपुर जिले का चयन किया जायेगा।

(2) प्रस्तुत शोध के लिए रायपुर जिले के अंतर्गत 20 विद्यालयों का चयन किया जायेगा।

(3) प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र एवं 20 छात्राएं कुल 800 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा।

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन :–

शोध विषय से संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन किया गया। किसी भी शोध प्रक्रिया में संबद्ध साहित्य के सर्वेक्षण का अपना एक विशिष्ट महत्व है जो यह बताता है कि संबंधित विषय में क्या–क्या कार्य किया जा चुका है एवं सम्बन्धित विषय में नए सन्दर्भों के साथ क्या नए शोध किए जा सकते है। संस्थागत वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित भारत तथा विदेश में किये गये शोध का अध्ययन किया गया

श्रीवास्तव और सक्सेना (2000) ने ''शिक्षकों की कार्य संतुष्टि व विद्यालयी संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन'' शोध से यह निष्कर्ष निकला कि जहां परंपरावादी विद्यालयी वातावरण है वहां शिक्षक कम संतुष्ट हैं। जहां विद्यालयों में नियंत्रण अधिक है वहां भी शिक्षक कम संतुष्ट हैं।

स्मिथ (2000) 'विद्यालय वातावरण और शिक्षक प्रतिबद्धता का अध्ययन' विषय से यह निष्कर्ष निकला कि विद्यालय वातावरण और शिक्षक प्रतिबद्धता इन दोनों के माध्यम से संगठनात्मक प्रभावशीलता भी बढ़ती है। वातावरण और प्रतिबद्धता दोनों के मध्य गहरा संबंध है। इसलिए विद्यालयी वातावरण को मजबूत बनाने के लिए और प्रतिबद्धता को बनाये रखने के लिए इन दोनों में सम्बन्ध होना आवश्यक है।

Kaur, S., & Nivas, R. (2016) ने कक्षा 10 के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि व उनके व्यक्तित्व के कारकों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। इस अध्ययन हेतु इन्होने पंजाब राज्य के छः जिले से प्रतिदर्श का चयन किया। आँकड़ों को एकत्र करने के हेतु इन्होने राय (1994) द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य मापनी, आइजैंक (1975) द्वारा निर्मित व्यक्तित्व इन्वेंट्री तथा राय (2006) द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण का उपयोग किया तथा आँकड़ों के विश्लेषण के लिये प्रोडेक्ट मूमेंट सहसम्बन्ध का प्रयोग किया। अध्ययन के निष्कर्षो में मानसिक स्वास्थ्य का संवेगात्मक बुद्धि व व्यक्तित्व के कारकों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

ए. चेम्पोंग, कासान्ड्रा डिक्सन (2010) ने इस शोध के अनुसार काले व अफ्रीकी, अमेरिकी इण्डियन अल्पसंख्यक चिकित्सक विद्यार्थियों में असली अमेरिकी विद्यार्थी से प्राथमिक चिकित्सा क्षेत्र में अधिक मानसिक स्थिरता पायी जाती है। गोरे अमेरिकियों में प्राथमिक चिकित्सा के प्रति नकारात्मक मानसिकता पायी जाती है। जबकि सामान्य चिकित्सा क्षेत्र में दोनों ही प्रकार के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में अन्तर नहीं पाया गया।

उपरोक्त शोधकार्यो व अन्य महत्वपूर्ण शोधोत्तर कार्यों के सर्वेक्षण के उपरान्त शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का उनके विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन से सम्बन्धित विषय पर शोधकार्यो का नितान्त अभाव है साथ ही इनसे सम्बन्धित जो भी निष्कर्ष प्राप्त हुये है वे अत्यधिक स्पष्ट जानकारी प्रदान नहीं कर रहें है, अतः इस शोध समस्या पर शोध करना आवश्यक है, अतः शोधार्थी ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का उनके विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना सुनिश्चित किया, ताकि शोध के परिणामों तथा निष्कर्ष से शिक्षाविदों, मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, प्रशासकों, निर्देशन एवं

परामर्शकर्त्ताओं, अभिभावकों इत्यादि को अत्यधिक स्पष्ट जानकारी प्राप्त हो सके जिससे ये सभी विद्यार्थियों के विकास में अपना सहयोग दे सके।

चर :–

शोध कार्य के अंतर्गत विभिन्न चरों का अध्ययन किया गया जो इस प्रकार है–

स्वतंत्र चर – संस्थागत वातावरण

आश्रित चर – विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य

शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखकर शोधकर्ती द्वारा वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है, क्योंकि शोध अध्ययन में आँकडो का संग्रह सर्वेक्षण विधि द्वारा सहजतापूर्वक किया जा सकता है।

जनसंख्या :–

शोध में जनसंख्या शब्द का अर्थ भिन्न होता है, जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाइयों के निरीक्षण से होता है। इसमें कुछ इकाईयों का चयन करके न्यादर्श बनाया जाता है। न्यादर्श की इकाईयों के निरीक्षण तथा मापन से जनसंख्या की विशेषताओं के संबंध में अनुमान लगाया जाता है। शोध की जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की एक जनसंख्या होती है। एक विशिष्ट समूह की समस्त इकाईयों को मिलाकर जनसंख्या कहते हैं।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में द्वितीयक समंकों के साथ–साथ प्राथमिक समंको का उपयोग मुख्य रूप से किया गया है। प्राथमिक समंकों के लिये सोद्देश्य न्यादर्श पद्धति के माध्यम से रायपुर तहसील के बीस ग्रामीण विद्यालयों के कक्षा ग्यारहवीं एवं कक्षा बारहवीं में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को प्रतिदर्श के रूप में चयन किया गया है और इन बीस ग्रामीण विद्यालयों के कक्षा ग्यारहवीं एवं कक्षा बारहवीं में अध्ययनरत् 400 छात्र व 400 छात्राओं अर्थात् कुल 800 छात्र–छात्राओं चयन प्रस्तुत शोध प्रबंध में प्रतिदर्श के रूप में किया गया है।

उपकरण :–

प्रस्तुत शोध प्रबंध में प्रदत्तों के संकलन के लिये अनुसंधान प्रक्रिया में शोध विधि न्यादर्श चयन आदि के पश्चात् परीक्षण के लिए तथा आंकड़ों के संग्रहण करने हेतु उपकरण की आवश्यकता होती है। उपकरणों द्वारा आंकड़ों का संकलन होता है। उपकरणों द्वारा आंकड़ों का संकलन शोध प्रक्रिया का महत्वपूर्ण सोपान है। इन आंकड़ों के आधार पर ही किसी शोध कार्य के निष्कर्ष निकाले जाते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उपकरणों को प्रयुक्त किया किया गया है –

1. संस्थागत वातावरण ज्ञात करने हेतु डा. एम.एल.शाह एवं डा. अमिता शाह द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत एकेडमिक क्लाइमेट डेसक्रिप्सन क्वेश्चनरी (ACDQ) संस्थागत वातावरण मापनी।
2. मानसिक स्वास्थ्य ज्ञात करने हेतु सुषमा तलेसरा और अख्तर बानो द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य मापनी।

परिकल्पना का प्रमाणीकरण एवं परिणाम :–

Ho1 "उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।" का सत्यापन क्रान्तिक अनुपात की मदद से किया गया है, विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका संख्या – 1 में दर्शाया गया हैं–

तालिका संख्या –1

संस्थागत वातावरण मापनी पर छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान, मानक विचलन, तथा 'CR' मान

संस्थागत वातावरण आयाम	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	.05 सार्थकता स्तर, df=498 पर निष्कर्ष
छात्र	400	209.07	35.30	0.0816	सार्थक नहीं
छात्राएं	400	208.87	34.01		

***0.**05 सार्थकता स्तर पर **'CR'** का सारणी मान = 1.96

विश्लेषण :–

उपरोक्त तालिका संख्या – 1 में संस्थागत वातावरण मापनी पर प्राप्त 400 छात्र एवं 400 छात्राओं के प्रदत्तों का कुल संस्थागत वातावरण का मध्यमान क्रमशः 209.07 व 208.87, मानक विचलन क्रमशः 35.30 व 34.01 तथा प्राप्त 'CR' का मान 0.0816 है, प्राप्त 'CR' का मान स्वतन्त्रता के स्तर df = 498 पर सार्थकता के स्तर 0.05 पर सारणी मान = 1. 96 से कम है, अतः यह प्राप्त मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

दण्डआरेख संख्या – 1

संस्थागत वातावरण मापनी पर छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान का दण्डआरेख

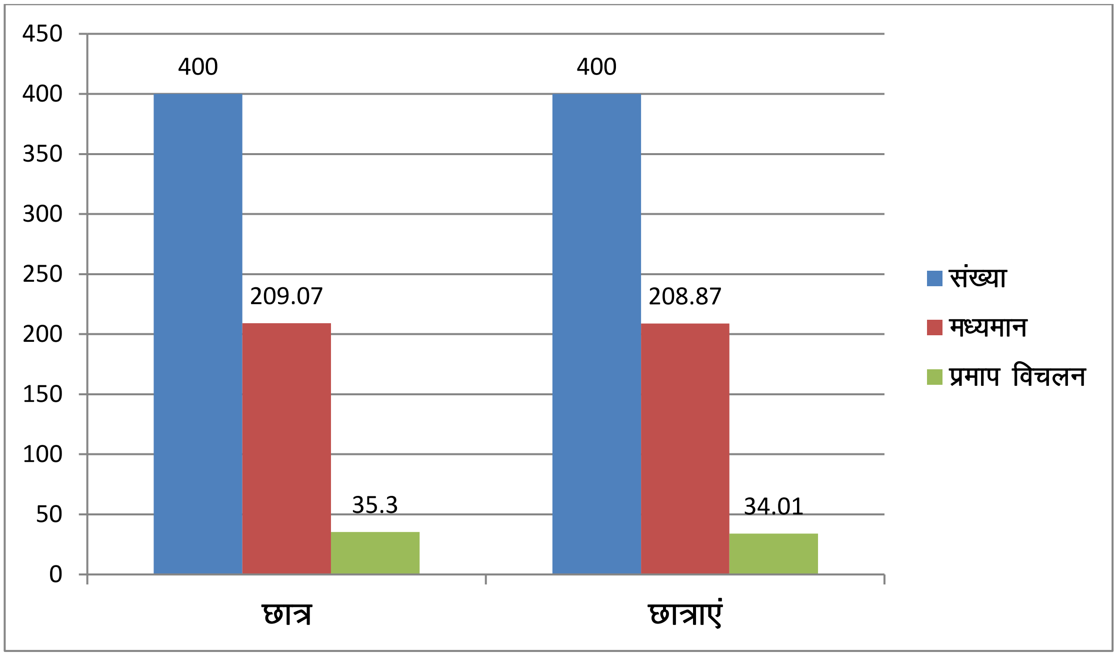

व्याख्या :–

प्रतिपादित परिकल्पना–1 में संस्थागत वातावरण की परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है, यह परिणाम इंगित करता है कि छात्र एवं छात्राओं के संस्थागत वातावरण के मध्यमान में सार्थक अन्तर है, अर्थात छात्र एवं छात्राओं के संस्थागत वातावरण में अन्तर व्याप्त है।

परिणाम की विवेचना :– उपरोक्त परिणाम इंगित करते है कि छात्रों का संस्थागत वातावरण छात्राओं के संस्थागत वातावरण की तुलना में अच्छा है। इसके मुख्य कारण छात्रों के संस्था का छात्राओ की तुलना में अंतर्वैयक्तिक सम्बन्ध व व्यक्तिगत अभिवृद्धि अधिक अच्छा होना इत्यादि रहे है। परिणामों में आयामों पर छात्रों के साथ संस्था का छात्राओं की तुलना में अंतर्वैयक्तिक सम्बन्ध अधिक अच्छा होने के प्रमुख कारण छात्रों के संस्था में छात्राओं की तुलना में अधिक संशक्ति का होना व अभिव्यंजकता का होना इत्यादि रहे है। छात्रों के संस्था का छात्राओं की तुलना में व्यक्तिगत अभिवृद्धि अधिक अच्छा होने के प्रमुख कारण छात्रों के संस्था में छात्राओं की तुलना में छात्रों को स्वतंत्रता मिलना इत्यादि रहे है। परिणामों में व्यवस्था रखरखाव में अंतर न होना संस्था में छात्र व छात्राओं दोनो लिये के समान नियंत्रण व व्यवस्था को दर्शाती है।

परिणाम में आयामों पर छात्रों की संस्था संशक्ति छात्राओं की संस्था संशक्ति की तुलना में अच्छी है, इसके मुख्य कारण संस्था में छात्राओं की तुलना में छात्रों के प्रति अधिक जुडाव रखना, मित्रता पूर्वक व्यवहार करना, साथ देना,

सहायता प्रदान करना, संस्था में सक्रिय भागीदारी निभाना के अवसर मिलना व सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार करना इत्यादि रहें हैं। छात्रों की संस्था अभिव्यंजकता छात्राओं की संस्था अभिव्यंजकता की तुलना में अच्छी है, इसके मुख्य कारण संस्था में छात्राओं से अधिक छात्रों के प्रति अधिक खुल कर विचारों को साझा करना, एक दूसरे के नकारात्मक और सकारात्मक पहलुओं पर चर्चा करना इत्यादि रहें हैं। छात्र–छात्राओं में संस्थागत द्वन्द्व समान पाया गया है इसके मुख्य कारण संस्था की व्यवस्था का अच्छा होना, एक दूसरे के सम्मान करना विवाद न करना, द्वेष न रखना, विचारों में एक मत होना तथा एक दूसरे पर विश्वास करना इत्यादि रहें हैं। संस्था में देखभाल की स्थिति छात्र–छात्राओं दोनों की समान पायी गयी है, इसके मुख्य कारण संस्था की व्यवस्था का अच्छा होना, आवश्यकताओं व गतिविधियों, का ध्यान रखा जाना व चिन्ता करना इत्यादि रहें हैं। छात्र–छात्राओं में स्वीकृति की स्थिति समान पायी गयी है, इसके मुख्य कारण संस्था में विचारों, राय, रूचियो व भावनाओं का सम्मान करना, माँगें पूरी करना इत्यादि रहें हैं। छात्राओं की तुलना में छात्रों में स्वतन्त्रता अधिक है, इसके मुख्य कारण संस्था में छात्राओं से अधिक छात्रों को उनके निर्णय का उनको स्वयं लेने देना, बाहर घूमने से संस्था में आपत्ति न करना, तथा छात्रों के लिये बाधा न बनना इत्यादि रहें हैं। छात्र–छात्राओं का उपलब्धि अभिविन्यास समान पाया गया है, इसके मुख्य कारण संस्था में दोनों के लिये अवसरों की उपलब्धता होना व दोनों की उपलब्धि हेतु सार्थक प्रयास करना इत्यादि रहें हैं। छात्र–छात्राओं का सांस्कृतिक नैतिक–धार्मिक पहलू समान पाया गया है, इसके मुख्य कारण संस्था में दोनों के लिये सांस्कृतिक नैतिक–धार्मिक पहलू पर ध्यान देना, दोनों का सांस्कृतिक नैतिक–धार्मिक कार्यों में प्रतिभाग करना, दोनों के द्वारा अच्छे आचरण करना व सांस्कृतिक नैतिक–धार्मिक नियमों का पालन करना इत्यादि रहें हैं। छात्र–छात्राओं का सक्रिय मनोरंजन अभिविन्यास समान पाया गया है, इसके मुख्य कारण संस्था में दोनों के लिये सक्रिय मनोरंजन अभिविन्यास पर ध्यान देना, दोनों का सामाजिक कार्यों, मनोरंजन व खेलकूद में प्रतिभाग करना, इत्यादि रहें हैं। छात्र–छात्राओं के संस्था में नियंत्रण की स्थिति समान पायी गयी है, इसके मुख्य कारण संस्था में नियमों का सबके लिये समान होना, छात्र–छात्राओं पर अभिभावकों का नियंत्रण समान होना व संस्था में अनुशासन का होना इत्यादि रहें हैं। छात्र–छात्राओं के संस्था में व्यवस्था की स्थिति समान पायी गयी है, इसके मुख्य कारण संस्था की व्यवस्था सबके लिये समान होना, संस्था में सबकी जिम्मेदारी का निर्धारित होना, व्यवस्थित तरीके से अपने कार्यों को करना व संस्था की व्यवस्था बनायें रखने में सहयोग देना इत्यादि रहें हैं।

Ho2 "उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा" का सत्यापन क्रान्तिक अनुपात की मदद से किया गया है, जिसके विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका संख्या – 2 में दर्शाया गया हैं–

तालिका संख्या – 2

मानसिक स्वास्थ्य मापनी पर छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान, मानक विचलन, तथा 'CR' मान

मानसिक स्वास्थ्य	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	'CR' मान	.05 सार्थकता स्तर, df=498 पर निष्कर्ष

छात्र	400	125.65	19.59	1.072	सार्थक नहीं
छात्राएं	400	125.55	19.71		

0.05 सार्थकता स्तर पर **'CR'** का सारणी मान = 1.96

विश्लेषण :–

उपरोक्त तालिका संख्या –2 में मानसिक स्वास्थ्य मापनी पर प्राप्त 400 छात्र एवं 400 छात्राओं के प्रदत्तों के कुल मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान क्रमशः 125.65 व 125.55 मानक विचलन क्रमशः 19.59 व 19.71 तथा 'CR' का मान 1.072 है, प्राप्त 'CR' का मान स्वतन्त्रता के स्तर df = 498 पर सार्थकता के स्तर 0.05 पर सारणी मान = 1.96 से कम है, अतः यह प्राप्त मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

दण्डआरेख संख्या – 2

मानसिक स्वास्थ्य मापनी पर छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान का दण्डआरेख

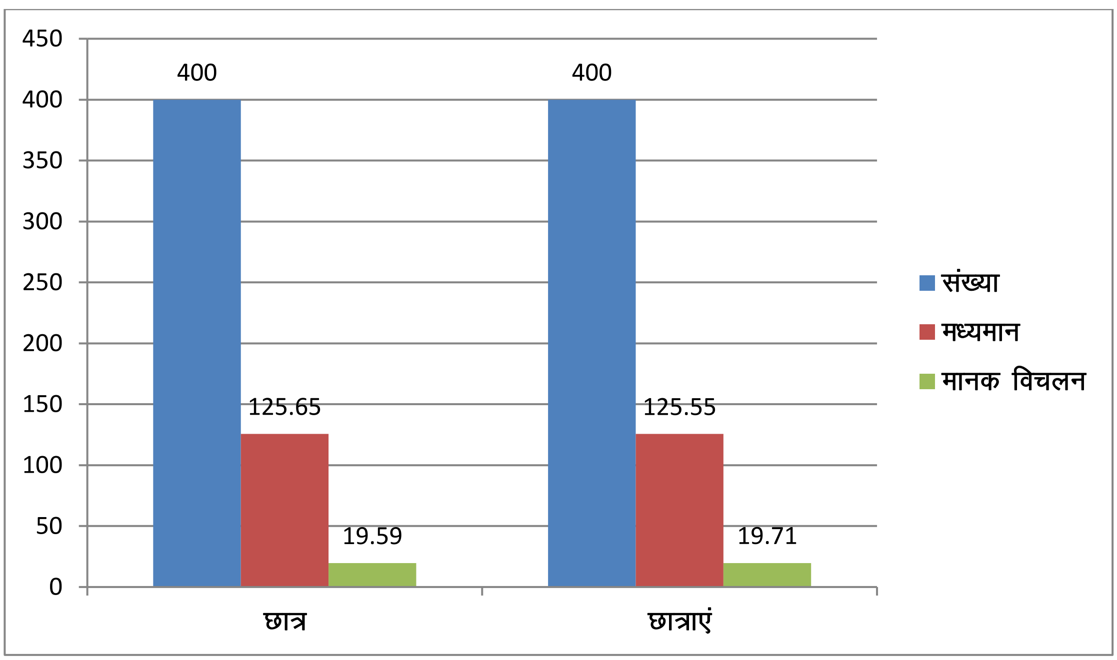

व्याख्या :–

प्रतिपादित परिकल्पना–2 में कुल मानसिक स्वास्थ्य की परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है, यह परिणाम इंगित करता है कि छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान में सार्थक अन्तर है, अर्थात छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण अन्तर व्याप्त है।

परिणाम की विवेचना :– उपरोक्त परिणाम इंगित करते है कि छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य उत्तम है परन्तु छात्राओं की तुलना में छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर है जिसके प्रमुख कारण छात्र एवं छात्राओं को मिलने वाली परिस्थितियां असमान होना, छात्रों की स्वायत्तता व सामाजिक परिपक्वता छात्राओं की तुलना में बेहतर होना इत्यादि रहे है। उपरोक्त परिणाम छात्र एवं छात्रायें दोनों यथार्थवादी है जिसके प्रमुख कारण छात्र एवं छात्राओं को यथार्थवादी होने के लिये मिलने वाली परिस्थितियां समान होना, दोनों में पुरानी मान्यताओं रीतिरिवाजो, अंधविश्वास में कमी आना, यथार्थ रूप से वस्तुओं का अवलोकन करने की क्षमता होना, उनकी आधुनिकतावादी सोच व उनका व्यवहारिक प्रवृत्ति का होना इत्यादि रहे है। परिणामों से ज्ञात होता है कि छात्र एवं छात्रायें दोनो खुश है जिसके प्रमुख कारण छात्र एवं छात्राओं को खुश रहने के लिये मिलने वाली परिस्थितियां समान होना, अभिभावकों का छात्रों के प्रति ध्यान देना, उनकी आवश्यकताओं को पूरा हो जाना, उनमें दबाव व तनाव न होना, उनका चिंता मुक्त होना, मनोरंजन खेलकूद के साधनों की उपलब्धता होना इत्यादि रहे है। उपरोक्त परिणाम में छात्रों की स्वायत्तता छात्राओं से अधिक पायी गयी है जिसके प्रमुख कारण छात्राओं को घर की चार दीवारी तक सीमित रखना व छात्रों को अधिक स्वतंत्रता मिलना, छात्रों में छात्राओं से अधिक पारिवारिक व सामाजिक प्रतिबंधों में कमी, छात्रों में छात्राओं से अधिक रोजगार व रोजगार विषयों में रूचि, छात्रों के निर्णय को छात्राओं के निर्णय से अधिक महत्व मिलना इत्यादि रहे है। उपरोक्त परिणामों में छात्र एवं छात्रायें दोनो के संवेगात्मक स्थायित्व में कोई अन्तर नही पाया गया है जिसके प्रमुख कारण छात्र एवं छात्राओं में अनुशासन का होना, दोनो में संवेगात्मक रूप से परिपक्व का होना, संवेंगो में नियंत्रण होना संवेगात्मक विसंगतियों मे ं कमी, समायोजी व्यवहार का करने की क्षमता होना, आत्म नियंत्रण होना इत्यादि रहे है। तथा परिणामों में छात्र छात्राओं से अधिक सामाजिक रूप से परिपक्व पाये गये है जिसके प्रमुख कारण छात्र में छात्राओं से अधिक संबंधों का समझ का होना, समायोजन की योग्यता होना, छात्र को छात्राओं से अधिक सामाजिक महत्व मिलना व सामाजिक जिम्मेदारियों में प्रतिभाग करने के अवसर मिलना इत्यादि रहे है।

Ho3 "उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण व उनके मानसिक स्वास्थ्य के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया जाएगा।" का सत्यापन **'r'** परीक्षण के आधार पर किया गया है, जिसके विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका संख्या –3 में दर्शाया गया हैं–

तालिका संख्या –3

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य 'r' मान

	N	मध्यमान	सहसम्बन्ध गुणांक ('r') मान	निष्कर्ष

संस्थागत वातावरण	800	208.97	0.575	मध्यम धनात्मक सहसम्बन्ध तथा .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक
मानसिक स्वास्थ्य	800	125.6		

***0.**05 सार्थकता स्तर पर **'r'** का सारणी मान = .088

विश्लेषण :—

उपरोक्त तालिका संख्या – 3 में संस्थागत वातावरण मापनी तथा मानसिक स्वास्थ्य मापनी पर 800 विद्यार्थियों के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 208.97 व 125.6 है तथा संस्थागत वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य प्राप्त 'r' का मान 0.575 है, यह प्राप्त मान .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

व्याख्या :—

प्रतिपादित परिकल्पना–3 को अस्वीकार किया जाता है, प्राप्त 'r' का मान इंगित करता है कि विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक मध्यम धनात्मक सहसम्बन्ध है, अर्थात विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य में महत्वपूर्ण सम्बन्ध व्याप्त है।

दण्डआरेख संख्या – 3

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान का दण्डआरेख

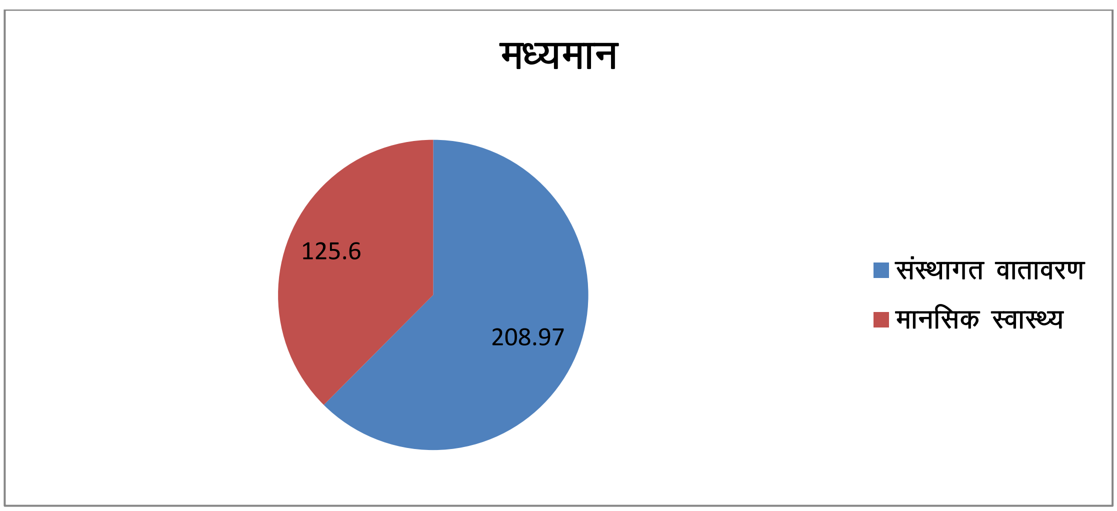

विवेचना :—

उपरोक्त परिणाम इंगित करते है कि अधिकतर विद्यार्थियों का संस्थागत वातावरण जिस स्तर का है उसी स्तर का उनका मानसिक स्वास्थ्य भी है। परिणाम इंगित करता है कि विद्यार्थियों का संस्थागत वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य एक ही दिशा में कार्य करते है। अर्थात् यदि विद्यार्थियों का संस्थागत वातावरण का स्तर उच्च है तो उन विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य भी ज्यादातर उच्च स्तर का होता है तथा यदि विद्यार्थियों का संस्थागत वातावरण का स्तर निम्न है तो उन विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य भी ज्यादातर निम्न स्तर का होता है। विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य में मध्यम धनात्मक सम्बन्ध व्याप्त होने के प्रमुख कारण संस्था का सामाजिक–आर्थिक व शैक्षिक स्तर, विद्यार्थियों को मिलने वाली स्वतंत्रता, देखभाल, व्यवस्था, आपस में खुली वार्तालाप, सहयोग, द्वन्द्व का न होना, इच्छाओं को न दबाना, तनाव, हीनता, भय, व व्यर्थ चिंता से दूर रखना, मित्रता व सहानुभूति पूर्ण अच्छा व्यवहार करना, शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रखने के प्रयासरत रहना, संस्था के सदस्यों का सकारात्मक दृष्टिकोण होना, विद्यार्थियों में आत्म विश्वास जाग्रत करना, संस्था में विद्यार्थियों का अच्छा समायोजन होना, नियमित दिनचर्या का अच्छा होना, खुश करना, तुलना किसी अन्य से न करना, नकारात्मक प्रवत्ति जागृत न होने देना, क्षमताओं को ध्यान में रखकर क्षमताओं को विकसित करना, यथार्थवादी दृष्टिकोण से मूल्यांकन एवं निर्णय लेने की क्षमताओं का विकास करना, बच्चों को पुनर्बलन देना, संवेगात्मक रूप से बच्चों के साथ जुड़े रहना, बच्चों के लिए व्यायाम खेलकूद मनोरंजन इत्यादि व अन्य सुविधाये उपस्थित होना, कमजोरियों को जानकर दूर करना, समस्या समाधान की योग्यता विकसित करना, सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं पर चर्चा करना इत्यादि रहे है।

सुझाव :–

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर विद्यार्थियों के संस्थागत वातावरण में सुधार के लिए शोधार्थी द्वारा दिए गए सुझाव निम्नलिखित हैं :–

माता –पिता के लिये सुझाव :–

1. माता –पिता को बच्चों के लिये संस्थागत वातावरण की भूमिका को समझ उनके अनुरूप संस्था का वातावरण बनाना चाहिये।
2. माता –पिता को संस्था के वातावरण को अधिक सौहार्द्रपूर्ण व गुणवत्ता पूर्ण बनाये रखना चाहियें।
3. माता –पिता को बालक के साथ सकारात्मक व्यवहार करना चाहिये तथा उनके सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं पर चर्चा कर उनकों प्रोत्साहित करते रहना चाहिये।

विद्यार्थियों के लिये सुझाव :–

1. विद्यार्थियों को अपने संस्था के सदस्यों साथ अपनें अंर्तवैयक्तिक संबंध को मजबूत करना चाहिये।
2. विद्यार्थियों को संस्था के सदस्यों के साथ मिलकर व स्वयं अपनी व्यक्तिगत अभिवृद्धि हेतु प्रयास करना चाहिये।
3. विद्यार्थियों को संस्था के साथ व्यवस्था के रखरखाव को सुदृढ़ बनाने हेतु उसमें सहयोग प्रदान करना चाहिये।
4. विद्यार्थियों को संस्था के साथ अपने सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं पर चर्चा करनी चाहिये।

5. विद्यार्थियों को संस्था के वातावरण को सौहद्रपूर्ण व गुणवत्तापूर्ण बनायें रखने के लिये सहयोग प्रदान करना चाहिये।

शिक्षकों के लिये सुझाव :–

1. शिक्षकों को विद्यार्थियों से सहानुभूति, मित्रतापूर्ण व्यवहार कर उचित शैक्षिक वातावरण का निर्माण व संबंध स्थापित करना चाहिये।
2. सभी विद्यार्थियों के साथ एक समान व्यवहार करना चाहिये।
3. विद्यार्थियों को विभिन्न शैक्षिक अवसरों की जानकारी प्रदान करना चाहिये।

5.4.4. प्रशासकों के लिये सुझाव :–

1. विद्यार्थियों के लिये उचित विद्यालयी परिवेश प्रदान करना चाहिये।
2. छात्रों की शैक्षिक रूचियों को ध्यान में रखकर विषयों को विद्यालय में पढ़ाना चाहियें।
3. विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों से अवगत कराना चाहिये।
4. पाठ्यक्रम ऐसा बनाना चाहिये जिससे विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित न हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

01. डॉ. कपिल एच. के. – अनुसंधान विधियां

02. कंवर आर.सी. – शिक्षा क्रीड़ा मनोविज्ञान

03. चारण महिपाल – शिक्षा दर्शन

04. डॉ. झा अवधेश – रिसर्च मेथेड़ोलॉजी

05. दुबे श्रीकृष्ण एवं श्रीमति शर्मा आर.के. – शिक्षा के मनोवैज्ञानिकीय आधार

06. जोशी धनंजय – नैतिक शिक्षा एवं नागरिक बोध
07. पाठक पी.डी. – शिक्षा मनोविज्ञान
08. पाठक पी.डी. व त्यागी एस.डी. – शिक्षा के सिद्धान्त
09. भगवान दास – शिक्षा मनोविज्ञान
10. डॉ. मिश्रा महेन्द्र कुमार – भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा दर्शन
11. शर्मा आर.ए. – शिक्षा अनुसंधान
12. सिंह श्याम – शिक्षा दर्शन
13. डॉ. वर्मा जी.एस. – अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का मनोविज्ञान
14. त्रिपाठी मधुसूदन – आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा
15. त्रिवेदी राकेश – भारतीय शिक्षा का इतिहास